

अग्नि

NānārthāSaṁ. ii. 114. 764; जगन्तु ViśvaPra. 92. 87; जन्यु ViśvaPra. 115. 12; MediK. 122. 27; जरुड NānārthāSaṁ. ii. 18. 86; जागृति NānārthāSaṁ. ii. 18. 89; जायु Prasā. ii. 601. 10; जिष्णु NānārthāSaṁ. i. 84. 481; जीर NānārthāSaṁ. i. 84. 483; ज्योतिस् Vaija. 224. 10; NānārthāSaṁ. 39. 8; ज्ञ DvyakṣaNā. 2. 63; ज्वलन NānārthāSaṁ. ii. 115. 778; ज EkārthaNā. 1. 42; जि EkārthaNā. 1. 43; तनूनपात् NānārthāSaṁ. iii. 11. 59; तपन NānārthāSaṁ. ii. 119. 824; तमोनुद् AmaK. 2513; Vaija. 241. 28; DharK. 1171; तमोपह AmaK. 2812; AnekāK. 965; तमोहन् ViśvaLoK. 196. 69; तरुज NānārthāSaṁ. ii. 118. 820; तुथ AnekāSaṁ. 2. 214; ViśvaPra. 75. 5; तेजस् AnekāSaṁ. 2. 569; NānārthaMa. 1893; त्रिधामन् NānārthāSaṁ. ii. 19. 95; दक्ष ViśvaLoK. 402. 6; दक्षाय, (v. l. दक्षार्थ, दक्षार्थ) NānārthāSaṁ. ii. 126. 898; दव NānārthāSaṁ. i. 26. 62; दहन AnekāSaṁ. 3. 373; MediK. 93. 75; दाव NānārthāSaṁ. i. 26. 63; दुरासद NānārthāSaṁ. iii. 50. 282; देवताड AnekāSaṁ. 4. 72; ParaNā. 3099; देव NānārthāSaṁ. i. 95. 618; चु ViśvaPra. 115. 1; धनञ्जय Vaija. 267. 24; TrikāSe. iii. 3. 315; धव DvyakṣaNā. 2. 34; धिष्य AmaK. 2845; AnekāSa. 320; DharK. 1877; धूमकेतु AmaK. 2451; AbhidhāRaMā. 5. 54; ध्व DvyakṣaNā. 2. 34; नीका SesāNā. 1711; नै EkārthaNā. 1. 68; पवि NānārthāSaṁ. i. 105. 731; पतङ्ग Vaija. 242. 40; NānārthaMa. 314; पवमान Vaija. 267. 27; SabdaRa.(Vā.) 4432; पवित्र Vaija. 261. 58; पशुपति Vaija. 267. 26; पाचल ParaNā. 3228; MediK. 166. 109; पाच्चजन्य SabdaRaSaK. 247. 17; पाय MediK. 76. 9; पावक DharK. 119; MediK. 10. 17; पि EkārthaNā. 1. 69; पिङ्गल TrikāSe. iii. 3. 401; ViśvaPra. 155. 78; पीति NānārthāSaṁ. i. 109. 779; पुरोहित NāmaMāli. 33; पृथु MediK. 76. 10; प्रजापति Vaija. 267. 34; प्रभाकर MediK. 154. 279; SabdaRaSaK. 290. 9; प्राचीनविहिस् Vaija. 269. 54; SabdaRa.(Vā.) 4479; पुक्षि NānārthāSaṁ. i. 28. 80; पुक्षि NānārthāSaṁ. i. 28. 80; Prasā. ii. 604. 14; फल्गुन SabdaRa.(Vā.) 4428; वशु AnekāSaṁ. 2. 431; AnekāK. 697; वहिस् Vaija. 234. 53; Liṅgānu.(He.) 12. 1; वहुल AmaK. 2733; AnekāSa. 16; व्रहन् Vaija. 234. 54; भलातकी KalpaK. 256. 71; भास्कर MediK. 147. 191; SabdaRaSaK. 277. 3; सुज NānārthāSaṁ. i. 28. 87; मविन् NāmaMāli. 33; मन्दसान NānārthāSaṁ. iii. 68. 493; मरत, (v. l. मरुज) NānārthāSaṁ. ii. 168. 1381; मलिनमुख MediK. 22. 18; मलिम्लच् TrikāSe. iii. 3. 77 महावीर Vaija. 278. 21; यज्ञ Vaija. 217. 47; NānārthāSaṁ. i. 29. 97; री EkārthaNā. 1. 82; वनि NānārthāSaṁ. i. 145. 1199; वभि NānārthāSaṁ. i. 145. 1200; वसु Liṅgānu.(Pa.) 104. 25; AbhidhāRaMā. 5. 64; Vaija. 236. 78; AnekāK. 918. etc. वहतु NānārthāSaṁ. ii. 27. 187; वहि NānārthāSaṁ. i. 145. 1198; वहि NānārthāSaṁ. i. 145. 1198; SabdaRa.(Su.) 4. 111; वाहुरु MediK. 46. 9; वाहक NānārthāSaṁ. ii. 194. 1683; विषु Vaija. 218. 55; Prasā. ii. 610. 13; विभाकर AnekāSaṁ. 4. 280; DharK. 2018; विभावसु Vaija. 268. 39; विरोचन AmaK. 2551; AnekāNi. 10; etc. विशिष्य NānārthaMa. 240; विश्वभर Vaija. 278. 22; विश्वदेवा: (v. l. विश्वदेवाः) NānārthāSaṁ. iii. 16. 114; वीर SabdaRa.(Vā.) 4002; वृषाकणि NānārthāSaṁ. iii. 76. 584; व्रत Vaija. 226. 31; NānārthāSaṁ. i. 143. 1178; शिखिन् Vaija. 218. 60; AnekāNi. 5. etc.; शुकुं Liṅgānu.(He.) 106. 9(C); KalpaK. 476. 139; शुकुं NānārthāSaṁ. i. 160. 1381; शुचि AnekāSa. 11; DharK. 391; etc. शुद्ध्यु NānārthāSaṁ. i. 162. 1401; KośaKaTa. 1. 447; शुषिर AnekāSaṁ. 3. 607; ViśvaLoK. 315. 231; शोण AnekāSaṁ. 2. 154; ViśvaPra. 48. 11; सप्ति NānārthāSaṁ. i. 169. 1484; सप्ताचिस् AnekāSaṁ. 3. 753; KośaKaTa. i. 447; सभ्य AnekāK. 630; समिध NānārthāSaṁ. ii. 32. 239; सप्ताज् Vaija. 219. 61; सुविर ViśvaPra. 135. 129; सृष्टि NānārthāSaṁ. ii. 221. 1998; स्थवि Prasā. ii. 605. 14; स्वाहानाथ NāmaMāli. 33; स्वैरिन् NāmaMāli. 33; हरि Vaija. 219. 67; हरि Vaija. 238. 99; होमि ViśvaLoK. 248. 40]

अग्नि (ag-ni) m. (Gr.) a technical term for nouns ending in -i and -u इदुदग्नि: Kātān. ii. 1. 8; अग्नेरमोऽकारः Kātān. ii. 1. 50; ii. 2. 1.

अग्निकक्ष (agni-ṛksa) n. the Pleiades अग्निपूजनीया । श्रीवामिकक्षे MatsyaP. 55. 12; अग्निकक्षं तु कृतिका CaturCin. ii(2). 682. 1.

अग्निक (agni-ka) m. 1 A fire यथा काष्ठचर्यं दूरात् प्राप्य घोरतरोऽग्निकः HāriS. i. 3. 17; 1 B the fire-god चन्द्रसुर्याग्निकादीनां मण्डलानि कमाद् यजेत् BhaviP. 397A. 34 (ii(3). 4. 9); 2 A the plant called *citraka* or *Plumbago zeylanica* धूतम्...सिद्धं वा हितमात्रमाहुः पत्तूर्तगलाग्निकैः SuśruS. vi. 9. 19; तीक्ष्णं धूमं देवदर्वग्निकाभ्याम्...युक्तमत्रादिशन्ति SuśruS. vi. 23. 10; जाजी-पिप्पलीमूलदाडिमवृक्षीच्याग्निकर्... समकृतं स्यात् HāriS. iii. 7. 64; iii. 11. 50;

अग्निको बस्तलोमानि पिचुमन्दश्च धूपनम् । शीतपूतनया ग्रस्ते तच्चेदं च चिकित्सितम् KāsyaS. 104B. 18; संचूर्ण्य व्योबरास्नामृताग्निकान् AstāHr. iv. 3. 63; iv. 7. 104; ब्रानामवसादनम् । जातीमुकुलकारीसमनोहालपुराग्निकैः AsṭāHr. vi. 25. 49; देवदर्वग्निकार्ष्ण्यग्निकोक्तुरु । ...तैविषाचितः । क्षीरेण च जयत्याशु ज्वरकासहलीमकान् AsṭāSaṁ. ii. 19. 24 (4. 4); ii. 23. 25 (4. 7); ii. 38. 17 (4. 7); कल्याणकं महातिर्त्तं षट्पलं पयसाग्निकैः AsṭāSaṁ. ii. 55. 7 (4. 9); ii. 106. 19 (4. 19) कटुग्निकिंडम् हिन्दुविडसैन्धवेलाग्निकान्...विचूर्ण्य KalyāKā. 8. 38; आलेपयेत्सैन्धवशकमर्दकुष्ठिग्निकिंडम् KalyāKā. 11. 94; भलातकास्थ्यग्निकिंडम् वृक्षार्थ-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...दग्धवा KalyāKā. 11. 97; 11. 123; 12. 23; 12. 124; चिक्रोदहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकैः DhanvNi. 86. 8; AbhidhāMañ. 9. 6; अग्निकैः सर्ववर्णश्च...दीपनः VisṇuDhaP. ii. 49. 32; सिद्धं वृषाग्निकैरण्डैः सपिष्या पष्टिकोदनम् । मुद्रशूषेण संभोज्यस्तमेवानुपिवेत्ततः Hastyāyur. 275. 26 (2. 53) नादेयीकुट्जाकिंडम् युवृहतीस्तुरुपिव्यव्याप्तिश्चार्थाग्निकैर्भृजार्कुदुर्ग-हरितालमनःशिलाश् । ...द